1

E Content for the Student of Patliputra University

Subject Political Science

Class- B.A.(Hons.), Part - III, Paper VIII

Topic- Non-Co-opration Movement 1920

Dr. Umesh Chandra Shukla
Associate Prof. Pol. Sc.
R.R.S. College, Mokama

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में सम्पूर्ण भारत के स्तर पर प्रथम आंदोलन असहयोग आंदोलन 1920 में चलाया गया। इसके पूर्व वे स्थानीय स्तर पर चम्पारण आंदोलन खेड़ा आंदोलन, अहमदाबाद मजदूर आंदोलन सफलता पूर्वक चला चुके थे। 1920 के असहयोग आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा और दशा निर्धारित करी। गाँधी जी का राष्ट्रीय नेतृत्व, सत्य-अहिंसा की नीति पर आधारित सत्याग्रह कार्यक्रम तथा सरकार के साथ पूर्ण असहयोग की नीति पर चलने का आह्वान इस आंदोलन की मुख्य मौलिकता एवं विशेषता थी। बड़े नेताओं के बीच कार्यक्रमों के लिए असमंजस को जनता ने स्वयं आगे बढ़कर स्वीकृति प्रदान की। 1919 के नागपुर अधिवेशन में इस आंदोलन की रूपरेखा का प्रस्ताव गाँधी जी ने रखा तथा 1920 के कलकत्ता अधिवेशन में इसपर स्वीकृति भारी मतों से की गई। एक अगस्त 1920 से आंदोलन को प्रारम्भ करना निश्चित हुआ।

<u>कार्यक्रम</u> – असहयोग आंदोलन के कार्यक्रम के रूप में गांधी जी के द्वारा यह निश्चित किया गया कि सरकारी संस्थाओं एवं विदेशी वस्तुओं का पूर्ण बहिष्कार

करना है। सरकारी नौकरियाँ छोड़ देनी है। स्कूल, कॉलेज भी छोड़ देते हैं। ब्रिटिश कारखानों में बनी वस्तुओं का परित्याग करना है। सरकारी पदवियाँ एवं रियासतों को भी लौटा देना है। घर घर चरखे का उपयोग करना है, खादी युक्त वस्त्र का उपयोग करना है, राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना करनी है, पंच निर्णय द्वारा विवादों का समाधान करना है, जिससे सरकारी कचहरियों में जाने से बचा जा सके। हिन्दू-मुस्लिम एकता बनाये रखना है। खिलाफत आंदोलन में सहयोग करना है। इस प्रकार इन कार्यक्रमों में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों तरह के कार्यक्रम थे।

गाँधी जी ने घोषणा की थी हर स्थिति में आंदोलन में सत्य और अहिंसा का पालन करना है। अगर एक वर्ष तक भारतीय पूर्णरूप में इस आंदोलन को चला लें तो अंग्रेज भारत छोड़कर जाने के लिए बाध्य होंगे। उनका तर्क था कि अंग्रेजों का मूल उद्देश्य व्यापार करना है। अगर उनका व्यापार नहीं होगा और शासनकार्य के लिए आवश्यक संख्या में लोग उपलब्ध नहीं होंगे तो उन्हें भारत छोड़ना उनकी लाचारी हो जायेगी।

<u>आंदोलन प्रारम्भ करने के कारण</u> –, असहयोग आंदोलन प्रारम्भ करने के निम्नलिखित कारण बताए जा सकते हैं –

(1) जालियाँवाला बाग काँड – 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जालियाँवाला बाग में निहत्थे भारतीयों पर, जो शांति पूर्वक सभा कर रहे थे, गोली चलाकर हजारों की संख्या में हत्या कर दी। जनरल डायर के आदेश से गोली तबतक चलती रही जबतक गोली खत्म न हो गई यह एक नृशंसतापूर्ण घटना थी। इसका व्यापक विरोध हुआ।

(2) हंटर कमीशन रिपोर्ट - ब्रिटिश सरकार ने जन भावना को शांत करने के लिए हंटर की अध्यक्षता में एक न्यायिक कमीशन का गठन कर दिया। किंतु इसने सरकार के प्रतिबंध आदेश दिये जाने के आधार पर डायर के कृत्य को उचित बतलाया। इससे भारतीयों की भावना और भी आहत हुई।

(3) कांग्रेस की जाँच कमीटी के रिपोर्ट - मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस ने एक जाँच कमीटी बनाई। इसने हंटर कमीशन के रिपोर्ट को खारीज कर दिया। तथा घटना के लिए पूर्णतः जनरल डायर को दोषी ठहराया।

(4) प्रथम विश्व युद्ध के बाद ब्रिटिश सरकार की वादा खिलाफी - प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों से मदद की अपील की थी तथा आश्वासन दिया था कि युद्ध समाप्त होते ही भारतीयों को स्वशासन दे दिया जायेगा। युद्ध की समाप्ति के बाद सरकार ने इस वादे को नहीं निभाया।

(5) रॉलेट एक्ट - ब्रिटिश सरकार ने अपने वादे को तो नहीं ही निभाया, इसके विपरीत एक काला कानून रॉलेट एक्ट बनाया। इस कानून के अन्तर्गत किसी की भी गिरफ्तारी की जा सकती थी, जिसमें न अपील, न दलील न वकील की आवश्यकता थी। इस कानून ने भी भारतीयों की भावना को आहत किया।

6. 1919 के अधिनियम से असंतोष - मार्ले-मिन्टो रिपोर्ट के आधार पर 1919 में अधिनियम बनाया गया। इसमें प्रांतों में द्वैध शासन प्रणाली लागू की गई। इस कारण राज्यों में दोहरी शासन व्यवस्था हो गई। कुछ विभाग। जनता के द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों के पास तो कुछ विभाग,

महत्वपूर्ण थे, गवर्नर के कौंसिल के अधीन थे। इससे सरकारी कार्यों में सामंजस्य बैठाना कठिन था। फलस्वरूप प्रांतीय व्यवस्था चरमराने लगी। इसने भारतीयों को काफी असंतुष्ट किया।

7. महात्मा गाँधी का नेतृत्व- असहयोग आंदोलन का एक महत्वपूर्ण कारण महात्मा गांधी के नेतृत्व का आगमन माना जा सकता है। उन्होंने कांग्रेस मंच को राष्ट्रीय स्तर पर निश्चित कार्यक्रम एवं नीति के आधार असहयोग आंदोलन के लिए तैयार किया। जनता का विश्वास नेतृत्व पर कायम हुआ।

इस आंदोलन का व्यापक प्रभाव पड़ा। शहर और गाँव के लोगों ने इसमें बढ़-चढ़कर भाग लेना शुरू किया। चरखे की घरघराहट घरों में गूंजने लगी। खादी स्वतंत्रता प्रेमियों की वर्दी हो गई। जेल का डर समाप्त हो गया। विदेशी कपड़ों की होली जलने लगी। छात्र स्कूल कालेजों का बहिष्कार करने लगे। वकील कचहरियों का बहिष्कार करने लगे। सामान्य जन से लेकर प्रबुद्ध बुद्धिजीवी, प्रोफेसर, डाक्टर, वकील इस आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लेने लगे। विद्यापीठ, जामिया मिलिया जैसे शिक्षण संस्थान खोले गये। आंदोलन अपने रूप में ठीक ठाक चल रहा था कि 22 फरवरी 1922 को उत्तर प्रदेश में चौरीचौरा पुलिस थाने में आग लगा दी। इसमें 22 पुलिस जिन्दा जल गये।

इस हिंसक घटना के बाद गाँधी जी ने अप्रत्याशित रूप में आंदोलन स्थगित कर दिया। तथा 21 दिन के लिए प्रायश्चित रूप में - उपवास पर चले गये।

नेहरू (पिता-पुत्र) सुभाष चन्द्र बोस को यह अच्छा नहीं लगा। कई नेताओं को यह अजीब जैसा लगा। किंतु गाँधी जी अपने निर्णय पर अडिग रहे। बाद में गाँधी जी को गिरफ्तार किया गया तथा छः साल की सजा दी गई।

परिणाम -

इस आंदोलन का परिणाम सामान्य रूप में सकारात्मक दीख नहीं पड़ता है। किन्तु इस आंदोलन का दूरगामी प्रभाव व्यापक रूप में पड़ा। इससे गाँधी जी की नीति एवं नेतृत्व को स्थापित कर दिया। संपूर्ण भारत में राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति उत्साह एवं जागरण का अजीब समा पैदा हुआ। इसी प्रकार इस आंदोलन ने असहयोग तथा बहिष्कार का ऐसा कार्यक्रम दिया, जिससे यह आशा बँधी कि अहिंसक प्रक्रिया द्वारा सचमुच स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है। गाँधी जनता तथा सरकार के बीच अपने कार्यक्रम के प्रति दृढ़ निश्चय का परिचय दिया। कोर्ट में भी उन्होंने अपना दोष दृढ़ता पूर्वक स्वीकार किया तथा सजा की माँग की। इस कारण गाँधी जी के नेतृत्व के प्रति उच्च भाव लोगों में पैदा हुई। यही कारण है कि इस आंदोलन के दूरगामी प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।